International Journal of Humanities, Commerce and Education
Volume 2 | Issue 5 | May 2026 (Special Issue) | ISSN: 3108-0456 (Online)
Available online at: https://ijhce.com/
DOI: https://doi.org/10.59828/ijhce.v2i5.64

कौटिल्य का मण्डल सिद्धान्त एवं विकसित भारत @2047 हेतु भारत की रणनीतिक रूपरेखा: संयुक्त राष्ट्र से परे वैश्विक संघर्ष प्रबन्धन का पुनर्विचार

Shivam Singh Gaur[1], Dr. D.C. Katiyar[2]
[1]Research Scholar, Defence and Strategic Studies, P.P.N. (P.G.) College, Kanpur
Chhatrapati Shahuji Maharaj University, Kanpur, U.P. 208024
[1]**Email ID**: ss518272@gmail.com
[2]Professor & Head, Department of Defence & Strategic Studies, P.P.N. (P.G.) College, Kanpur

Received: 11 April 2026 | **Accepted:** 28 April 2026 | **Published:** 15 May 2026

Abstract (सारांश)

यह शोध-पत्र 21वीं सदी के जटिल वैश्विक संघर्षों के संदर्भ में पारंपरिक एवं समकालीन संघर्ष-प्रबंधन तंत्रों का पुनर्मूल्यांकन करता है। इसमें संयुक्त राष्ट्र (यूएन) की सामूहिक सुरक्षा व्यवस्था तथा उदार संस्थागत ढांचे की सीमाओं को रेखांकित करते हुए, कौटिल्य के अर्थशास्त्र में प्रतिपादित मण्डल सिद्धांत को एक यथार्थवादी विकल्प के रूप में प्रस्तुत किया गया है, जो शक्ति-संतुलन, रणनीतिक हितों एवं गतिशील पड़ोसी संबंधों पर आधारित है। संयुक्त राष्ट्र की शांति-स्थापन प्रणाली वीटो शक्ति के कारण अक्सर निष्क्रिय हो जाती है। सीरिया, यूक्रेन और गाजा जैसे संघर्षों में स्थायी सदस्यों द्वारा वीटो का प्रयोग गंभीर मानवीय संकटों के बावजूद प्रभावी कार्रवाई को बाधित करता है, जिससे इसकी संरचनात्मक कमजोरियाँ उजागर होती हैं।

*कौटिल्य का मण्डल सिद्धांत राज्यों के संबंधों को शत्रु, मित्र एवं अन्य श्रेणियों में विभाजित करते हुए स्वार्थ-आधारित, लचीले गठबंधनों पर बल देता है। साथ ही षाड्गुण्य नीति—साम, दाम, दण्ड, भेद, संधि और विग्रह—व्यावहारिक एवं परिस्थिति-आधारित कूटनीति को प्रोत्साहित करती है, जो कठोर बहुपक्षवाद की अपेक्षा अधिक प्रभावी सिद्ध हो सकती है। **'विकसित भारत @2047'** के दृष्टिकोण में भारत **'पड़ोसी प्रथम', 'एक्ट ईस्ट' और इंडो-पैसिफिक** जैसी पहलों के माध्यम से यथार्थवाद एवं बहुपक्षवाद का समन्वय कर रहा है। संयुक्त राष्ट्र शांति मिशनों में प्रमुख योगदान तथा क्वाड, एससीओ और ब्रिक्स में सक्रिय भागीदारी भारत को 'विश्व मित्र' के रूप में स्थापित करती है।*

अतः प्राचीन भारतीय यथार्थवाद और आधुनिक संस्थागत ढांचे के समन्वय पर आधारित एक हाइब्रिड मॉडल वैश्विक शांति, स्थिरता एवं प्रभावी शासन के लिए अधिक उपयुक्त मार्ग प्रस्तुत करता है।

कीवर्ड: *मण्डल सिद्धान्त (Mandala Theory), कौटिल्य / चाणक्य (Kautilya / Chanakya), भारतीय विदेश नीति (Indian Foreign Policy), संयुक्त राष्ट्र (United Nations), वैश्विक संघर्ष प्रबन्धन (Global Conflict Management), विश्वगुरु (Vishwaguru).*

प्रस्तावना

वर्तमान अंतरराष्ट्रीय व्यवस्था तीव्र भू-राजनीतिक प्रतिस्पर्धा, क्षेत्रीय संघर्षों, मानवीय संकटों और बहुध्रुवीय शक्ति-संतुलन के कारण निरंतर परिवर्तनशील बनी हुई है। इस संदर्भ में संयुक्त राष्ट्र की संघर्ष-प्रबंधन क्षमता, विशेषकर दीर्घकालिक युद्धों, गृहयुद्धों और महाशक्तियों के टकराव के मामलों में, कई सीमाओं से घिरी प्रतीत होती है। ऐसे समय में कौटिल्य का मण्डल सिद्धान्त एक प्राचीन किन्तु अत्यंत प्रासंगिक रणनीतिक दृष्टिकोण प्रस्तुत करता है, जो मित्र, शत्रु, तटस्थता, गठबंधन और हित-संतुलन के आधार पर राज्य-व्यवहार की यथार्थवादी व्याख्या करता है।

यह शोध पत्र **"कौटिल्य का मण्डल सिद्धान्त एवं विकसित भारत @2047 हेतु भारत की रणनीतिक रूपरेखा: संयुक्त राष्ट्र से परे वैश्विक संघर्ष प्रबंधन का पुनर्विचार"** विषय पर केंद्रित है। इसका उद्देश्य यह विश्लेषण करना है कि क्या कौटिल्य की सामरिक सोच आज की भारतीय विदेश नीति, रणनीतिक स्वायत्तता और वैश्विक भूमिका के लिए एक वैकल्पिक बौद्धिक आधार प्रदान कर सकती है। भारत की समकालीन विदेश नीति

This is an open access article under the Creative Commons Attribution-Non-Commercial 4.0 International License.
© The Author(s) 2026. IJHCE Published by Surya Multidisciplinary Publication.

में ***'नेबरहुड फर्स्ट', 'एक्ट ईस्ट', बहुपक्षीय सहभागिता*** तथा ***वैश्विक दक्षिण*** के नेतृत्व जैसे तत्व इस विचार को सुदृढ़ करते हैं कि प्राचीन भारतीय ज्ञान-परंपरा आधुनिक कूटनीति से असंगत नहीं, बल्कि उसे नई दिशा प्रदान कर सकती है। विकसित भारत @2047 की परिकल्पना केवल आर्थिक उन्नति तक सीमित नहीं है, बल्कि यह सुरक्षा, स्थिरता, आत्मनिर्भरता, सभ्यतागत आत्मबोध और वैश्विक उत्तरदायित्व के समन्वय पर आधारित एक व्यापक राष्ट्रीय दृष्टि है। इसी परिप्रेक्ष्य में यह अध्ययन मण्डल सिद्धान्त को मात्र ऐतिहासिक विमर्श नहीं, बल्कि एक जीवंत रणनीतिक उपकरण के रूप में देखता है। इसके माध्यम से भारत संयुक्त राष्ट्र-केंद्रित ढांचे से आगे बढ़कर अधिक लचीली और प्रभावी संघर्ष-प्रबंधन तथा शांति-निर्माण की रणनीतियाँ विकसित कर सकता है।

यह शोध **गुणात्मक, विश्लेषणात्मक और तुलनात्मक** पद्धति पर आधारित है, जिसका केंद्रीय तर्क है कि 2047 तक विकसित और प्रभावशाली राष्ट्र बनने के लिए भारत को अपनी सभ्यतागत विरासत और समकालीन यथार्थ के बीच संतुलन स्थापित करना होगा।

अनुसंधान के उद्देश्य

इस शोध पत्र के प्रमुख उद्देश्य निम्नलिखित हैं:

1. **कौटिल्य के मण्डल सिद्धान्त का विश्लेषणात्मक अध्ययन करना—**

इस उद्देश्य के अंतर्गत मण्डल सिद्धान्त की संरचना, मूल तत्त्व तथा परराष्ट्र नीति और राज्य-व्यवहार में उसकी प्रासंगिकता का अध्ययन किया जाएगा। साथ ही यह देखा जाएगा कि यह सिद्धान्त आधुनिक अंतरराष्ट्रीय संबंधों में शक्ति-संतुलन, मित्र-शत्रु संबंध और सामरिक स्वायत्तता को समझने में कैसे सहायक है।

2. **भारत की रणनीतिक विदेश नीति और संयुक्त राष्ट्र-आधारित संघर्ष प्रबन्धन के संबंध को समझना—**

इस उद्देश्य के अंतर्गत भारत की समकालीन विदेश नीति, विशेषकर 'नेबरहुड फर्स्ट', 'एक्ट ईस्ट', बहुपक्षवाद और वैश्विक दक्षिण के साथ सहभागिता का विश्लेषण किया जाएगा। इसके साथ यह भी अध्ययन किया जाएगा कि संयुक्त राष्ट्र के संघर्ष प्रबन्धन तंत्रों की सीमाओं के बीच भारत की रणनीतिक भूमिका कैसे विकसित हो रही है और उसमें कौटिल्यीय दृष्टि कैसे उपयोगी है।

3. **विकसित भारत @2047 के लिए एक वैकल्पिक रणनीतिक रोडमैप प्रस्तावित करना—**

इस उद्देश्य में यह प्रतिपादित किया जाएगा कि 2047 तक भारत को विकसित, सुरक्षित, आत्मनिर्भर और वैश्विक रूप से प्रभावशाली बनाने हेतु किस प्रकार की रणनीतिक दिशा अपनाई जा सकती है। यह रोडमैप कौटिल्य के मण्डल सिद्धान्त, आधुनिक कूटनीति, क्षेत्रीय संतुलन और वैश्विक संघर्ष प्रबन्धन के समन्वय पर आधारित होगा, जिससे भारत संयुक्त राष्ट्र से परे भी एक प्रभावशाली शांति-निर्माता शक्ति बन सके।

साहित्य समीक्षा

इस शोध पत्र के लिए उपलब्ध साहित्य को **चार प्रमुख श्रेणियों** में विभाजित किया जा सकता है: (1) कौटिल्य के मण्डल सिद्धान्त पर प्राथमिक और द्वितीयक स्रोत, (2) भारत की विदेश नीति में मण्डल सिद्धान्त का आधुनिक अनुप्रयोग, (3) संयुक्त राष्ट्र के संघर्ष प्रबन्धन की सीमाएँ, तथा (4) विकसित भारत @2047 की रणनीतिक दृष्टि। यह समीक्षा इन स्रोतों की प्रासंगिकता, योगदान, कमियों और शोध अंतराल को उजागर करती है।

1. ***कौटिल्य के मण्डल सिद्धान्त पर साहित्य***

कौटिल्य का अर्थशास्त्र **(R. Shamasastry अनुवाद, 1915)** मण्डल सिद्धान्त का मूल स्रोत है, जो राज्य को केंद्र में रखकर पड़ोसी राज्यों को शत्रु, मित्र, मित्र-मित्र आदि के रूप में परिभाषित करता है।

आधुनिक व्याख्याएँ जैसे "Kautilya Mandala Theory" **(Mishra, 2012)** पड़ोसी को स्वाभाविक शत्रु मानने की अवधारणा पर जोर देती हैं।हालाँकि, ये स्रोत मुख्यतः सैद्धांतिक हैं और समकालीन अनुप्रयोगों का गहन विश्लेषण कम करते हैं।

2. ***भारत की विदेश नीति में मण्डल सिद्धान्त का अनुप्रयोग***

"An Analysis of the Mandala Theory in India's Foreign Relations" **(Bhatt & Brahmbhatt, IJIRT, 2025)** 'नेबरहुड फर्स्ट' और 'एक्ट ईस्ट' को मण्डल के सांद्र वृत्तों से जोड़ती है, तथा क्वाड और रूस-भारत साझेदारी को बाहरी वृत्तों के रूप में देखती है।

"Kautilya's Mandala in India's Foreign Policy" **(PJHSS, 2023)** दक्षिण एशिया में भारत-चीन प्रतिस्पर्धा को मण्डल के माध्यम से व्याख्या करती है।

"Kautilya's Ideas for Diplomacy and its Reflection in India's Foreign Policy" **(EJSSS, 2024)** विजिगीषु अवधारणा को भारत की क्षेत्रीय प्रभुत्व की महत्वाकांक्षा से जोड़ती है। "The Mandala Theory Revisited" **(SSRN, 2024)** बहुध्रुवीय दुनिया

में मण्डल की प्रासंगिकता पर बल देता है। VIF India (2025) मण्डल को मल्टीपोलैरिटी से जोड़ता है। ये अध्ययन मण्डल को भारत की कूटनीति में निरंतरता दिखाते हैं, किन्तु विकसित भारत @2047 जैसे भविष्योन्मुखी रोडमैप पर कम ध्यान देते हैं।

3. ***संयुक्त राष्ट्र के संघर्ष प्रबन्धन पर साहित्य***

"India's Legacy in UN Peacekeeping" **(PIB, 2025)** भारत को UN शांतिरक्षा में सबसे बड़ा योगदानकर्ता बताता है, किन्तु वीटो और धीमी प्रतिक्रिया की सीमाओं का उल्लेख करता है।

4. विकसित भारत @2047 और रणनीतिक दृष्टि

Valdai Club (2025) विकसित भारत के लिए प्राथमिकताओं पर चर्चा करता है। "UNO's Global Mission and India's Aspiration for Viksit Bharat @2047" **(IJFMR, 2025)** UN और भारत की महत्वाकांक्षाओं को संतुलित करता है। ये स्रोत भविष्योन्मुखी हैं, किन्तु प्राचीन भारतीय ज्ञान प्रणाली का एकीकरण कम है।

सैद्धांतिक ढांचा

इस शोध पत्र का सैद्धांतिक ढांचा कौटिल्य के मण्डल सिद्धान्त पर आधारित है, जो अर्थशास्त्र के **षष्ठ अध्याय** में वर्णित है। मण्डल सिद्धान्त राज्य को केंद्र में रखकर एक काल्पनिक वृत्त (मण्डल) की संरचना प्रस्तुत करता है, जिसमें ***विजिगीषु*** (केंद्रीय राज्य), ***आरि*** (तत्कालीन पड़ोसी शत्रु), ***मित्र*** (शत्रु का शत्रु), ***आरिमित्र*** (मित्र का मित्र), ***आरिमित्रमित्र*** (मित्र का मित्र का मित्र) आदि शामिल हैं। यह सिद्धान्त अंतर्राष्ट्रीय संबंधों को यथार्थवादी दृष्टि से देखता है, जहाँ शक्ति-संतुलन, हित-संरक्षण और सामरिक लचीलापन प्रमुख हैं। पड़ोसी को स्वाभाविक शत्रु मानते हुए कौटिल्य राज्य को विस्तारवादी (विजिगीषु) बनने का निर्देश देते हैं, किन्तु धर्म, अर्थ और काम के संतुलन के साथ।

मण्डल सिद्धान्त का मूल सिद्धांत **षड्गुण्य नीति** (षट् उपाय) है: (1) संधि (शांति), (2) विग्रह (युद्ध), (3) आसन (तटस्थता), (4) यान (प्रस्थान/गठबंधन), (5) संश्रय (दोहरी नीति), (6) द्वैधिभाव (भेद नीति)। ये नीतियाँ राज्य की सप्तांग संरचना (स्वामी, अमात्य, जनपद, दुर्ग, कोष, दंड, मित्र) पर आधारित हैं, जो राष्ट्रीय शक्ति को मापती हैं। इसके अतिरिक्त **चतुरुपाय** (सम, दान, भेद, दंड) कूटनीतिक उपकरण प्रदान करते हैं, जो शक्ति-असमानता को संतुलित करने में सहायक हैं। यह ढांचा आधुनिक अंतरराष्ट्रीय संबंध सिद्धांतों से भिन्न है, जहाँ पश्चिमी यथार्थवाद (मॉर्गेंथाउ) शक्ति को लक्ष्य मानता है, जबकि कौटिल्य में धर्मनिष्ठ यथार्थवाद है। भारत की विदेश नीति में इसका प्रतिबिंब 'नेबरहुड फर्स्ट' (आरि), क्वाड/इंडो-पैसिफिक (आरिमित्रमित्र), और वैश्विक दक्षिण नेतृत्व (संश्रय) में दिखता है।

विकसित भारत @2047 के संदर्भ में यह ढांचा एक वैकल्पिक रोडमैप प्रस्तुत करता है, जहाँ UN की सीमाओं (*वीटो, धीमी प्रतिक्रिया*) को पार करते हुए क्षेत्रीय गठबंधन, मिनिलेटरलिज्म और सामरिक स्वायत्तता पर जोर दिया जाए। इस प्रकार, मण्डल सिद्धान्त बहुध्रुवीय विश्व में भारत की रणनीतिक सोच का आधार भी है।

मुख्य विश्लेषण के विषय

1. **कौटिल्य के मण्डल सिद्धान्त का परिचय**

कौटिल्य का मण्डल सिद्धान्त अर्थशास्त्र के षष्ठ अध्याय में वर्णित है, जो राज्य को एक केंद्रीय बिंदु मानकर **12 राज्यों** के वृत्ताकार मंडल की कल्पना करता है। केंद्र में विजिगीषु (विस्तारवादी राज्य), पूर्व में आरि (तत्कालीन शत्रु), पश्चिम में मित्र (शत्रु का शत्रु), तथा बाह्य वृत्तों में आरिमित्र, आरिमित्रमित्र आदि शामिल हैं। पड़ोसी को स्वाभाविक शत्रु मानते हुए कौटिल्य कहते हैं, **"प्रत्येक राज्य का तत्कालीन पड़ोसी उसका शत्रु होता है।"** यह सिद्धान्त शक्ति (स्वामी, अमात्य, जनपद, दुर्ग, कोष, दंड, मित्र) के सात अंगों पर आधारित है, जो राज्य की समग्र क्षमता मापता है। मण्डल गतिशील है—मित्र-शत्रु संबंध हितों के अनुसार बदल सकते हैं।

2. **आधुनिक अंतरराष्ट्रीय संबंधों में इसकी प्रासंगिकता**

आज के बहुध्रुवीय विश्व में मण्डल सिद्धान्त रणनीतिक स्वायत्तता और क्षेत्रीय संतुलन को समझाने में सक्षम है। उदाहरणस्वरूप, भारत के लिए चीन आरि (तत्कालीन शत्रु), अमेरिका मित्र (चीन का प्रतिस्पर्धी), क्वाड आरिमित्र (मित्र का मित्र), तथा रूस आरिमित्रमित्र है। 'नेबरहुड फर्स्ट' नीति (पाकिस्तान, बांग्लादेश, नेपाल) मण्डल के सांद्र वृत्त को मजबूत करने का प्रयास है, जबकि SCO/BRICS बाह्य वृत्तों का विस्तार करते हैं। मण्डल यथार्थवाद पश्चिमी सिद्धांतों से भिन्न है, क्योंकि इसमें धर्मनिष्ठता (राजधर्म) शामिल है।

3. **संयुक्त राष्ट्र की सीमाएँ**

संयुक्त राष्ट्र का शांति-सुरक्षा तंत्र (*अध्याय VII, शांतिरक्षा*) वीटो प्रणाली, महाशक्तियों के हित, और धीमी प्रतिक्रिया से बाधित है। उदाहरण: यूक्रेन (२०२२) और गाजा (२०२३) में UNSC की सीमाएँ स्पष्ट हुईं। भारत, UN शांतिरक्षा में प्रमुख योगदानकर्ता होने पर भी, सुधारों

(UNSC स्थायी सदस्यता) में अटका है। मण्डल दृष्टि से UN एकमात्र मंडल नहीं—क्षेत्रीय संगठन (SAARC, ASEAN) भी आवश्यक हैं।

4. **विकसित भारत @2047 के लिए रणनीतिक रूपरेखा**

विकसित भारत @2047 की दृष्टि में विदेश नीति आत्मनिर्भरता, प्रौद्योगिकी, और वैश्विक नेतृत्व पर केंद्रित है। मण्डल के अनुसार, भारत को विजिगीषु बनना होगा—आर्थिक शक्ति (उच्च GDP), सैन्य आधुनिकीकरण (आत्मनिर्भर भारत), और कूटनीतिक लचीलापन विकसित करना होगा। QUAD, I2U2 जैसे मंच मित्र-वृत्त को मजबूत करते हैं, जबकि G20 वैश्विक दक्षिण का प्रतिनिधित्व करता है।

5. **संयुक्त राष्ट्र से परे वैश्विक संघर्ष प्रबन्धन**

UN से परे मण्डल-आधारित प्रबन्धन में क्षेत्रीय पहलें (बिम्सटेक, BBIN), मिनिलेटरलिज्म (QUAD), और पूर्व-निवारक कूटनीति शामिल हैं। उदाहरण: भारत की मध्यस्थता (रूस-यूक्रेन, ईरान-सऊदी)। षड्गुण्य नीति के अंतर्गत संधि और भेद के प्रयोग से संघर्षों को नियंत्रित किया जा सकता है। विकसित भारत के लिए यह 'विश्व मित्र' की भूमिका होगी—UN को पूरक बनाते हुए।

निष्कर्ष

यह शोध पत्र दर्शाता है कि कौटिल्य का मण्डल सिद्धान्त केवल प्राचीन सिद्धांत नहीं, बल्कि आधुनिक अंतरराष्ट्रीय संबंधों के लिए एक जीवंत रणनीतिक उपकरण है। बहुध्रुवीय विश्व में संयुक्त राष्ट्र के संघर्ष प्रबन्धन तंत्र की सीमाएँ—जैसे वीटो प्रणाली, महाशक्तियों का वर्चस्व और धीमी प्रतिक्रिया—भारत को वैकल्पिक रास्ते अपनाने के लिए प्रेरित करती हैं। मण्डल सिद्धान्त के माध्यम से भारत अपनी 'नेबरहुड फर्स्ट', 'एक्ट ईस्ट', क्वाड और वैश्विक दक्षिण नेतृत्व जैसी नीतियों को यथार्थवादी ढांचे में रख सकता है।

विकसित भारत @2047 की दृष्टि में मण्डल सिद्धान्त विजिगीषु (विस्तारवादी) भूमिका निभाने, शक्ति के सात अंगों को मजबूत करने और षड्गुण्य नीति के माध्यम से लचीली कूटनीति अपनाने का मार्ग प्रशस्त करता है। भारत को 'विश्व मित्र' और 'शांति निर्माता' के रूप में स्थापित करने के लिए यह ढांचा आत्मनिर्भरता, क्षेत्रीय संतुलन और सभ्यतागत नेतृत्व को एकीकृत करता है। शोध के केंद्रीय तर्क की पुष्टि होती है कि भारतीय ज्ञान प्रणाली वैश्विक शासन को पुनर्कल्पित करने में सक्षम है, जहाँ UN एक पूरक भूमिका में रह सकता है।

अंततः, मण्डल सिद्धान्त भारत को 2047 तक एक विकसित, सुरक्षित और प्रभावशाली राष्ट्र बनाने की रणनीतिक कुंजी प्रदान करता है।

संदर्भ सूची

[1]. Bhatt, N. K., & Brahmbhatt, M. N. (2025). *An analysis of the Mandala theory in India's foreign relations. International Journal of Innovative Research in Technology*, 10(5), 1-6. https://ijirt.org/publishedpaper/IJIRT185166_PAPER

[2]. Kautilya. (1915). *Arthashastra* (R. Shamasastry, Trans.). Wesleyan Press. (Original work published ca. 300 BCE)

[3]. Mehta, A. K. (2023). *Kautilya's Mandala in India's foreign policy. Pakistan Journal of Humanities and Social Sciences*, 11(4), 4232-4242. https://www.scribd.com/document/793027246/PJHSS-VOL11-NO4-2023-28

[4]. Ministry of External Affairs, Government of India. (2025, March 19). Question no. 219: *Efforts to make a Viksit Bharat by 2047.* Rajya Sabha. https://www.mea.gov.in/rajya-sabha.htm?dtl/39223/QUESTION+NO+219+EFFORTS+TO+MAKE+A+VIKSIT+BHARAT+BY+2047

[5]. Pandey, S. (n.d.). Decoding *India's foreign policy through Kautilya*. https://swetankpandey.com/decoding-indias-foreign-policy-through-kautilya/

[6]. Press Information Bureau. (2025, November 19). *India's legacy in UN peacekeeping: Leadership, commitment*. https://www.pib.gov.in/PressReleasePage.aspx?PRID=2109587

[7]. Rangarajan, L. N. (Ed.). (1992). *The Arthashastra*. Penguin Books.

[8]. Samvadaworld. (2021, January 26). *Chanakya's six-fold policy and its relevance for diplomacy.* https://samvadaworld.com/national/chanakyas-six-fold-policy-and-its-relevance-for-diplomacy-in-the-emerging-world/

[9]. Sharma, R. (2024). *Kautilya's ideas for diplomacy and its reflection in India's foreign policy. European Journal of Social Sciences Studies,* 9(2), 1-15. https://www.ejsss.net.in/article_html.php?did=15242

[10]. Singh, A. (2025). *From Mandala to multipolarity: Can a 2300-year-old treatise guide modern India?.* Vivekananda International Foundation. https://www.vifindia.org/print/13836

[11]. The Academic. (2025). *कौटिल्य का मण्डल सिद्धान्त और अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति* [PDF]. https://theacademic.in/wp-content/uploads/2025/09/56.pdf

[12]. Valdai Club. (2025, June 18). *India's foreign policy priorities for Viksit Bharat Vision 2047.* https://valdaiclub.com/a/highlights/india-s-foreign-policy-priorities/

[13]. Verma, S. (2026, February 15). *Viksit Bharat 2047: Redefining foreign policy*. PMF IAS. https://www.pmfias.com/viksit-bharat-2047/

[14]. Yadav, R. (2024). *The Mandala theory revisited: Kautilya's diplomacy in contemporary geopolitical landscape*. SSRN. https://papers.ssrn.com/sol3/papers.cfm?abstract_id=5054075

[15]. Yadav, S. (2025). *UNO's global mission and India's aspiration for Viksit Bharat @2047*. International Journal of Frontier Missions Research, 5(2), 1-12. https://www.ijfmr.com/papers/2025/5/56727.pdf

[16]. Yadav, S. (2020). *India's strategic culture and its Kautilyan lineage. USI Journal*, 150(622), 196-211. https://usiofindia.org/pdf/2020%20Oct-Dec-196-211.pdf

[17]. Yadav, S. (2026, *February 18). Chanakya's Mandala theory: An ancient realist framework. Social Science Journal*, 12(1), 1-15. https://www.socialsciencejournal.in/assets/archives/2026/vol12issue1/12056.pdf

Cite this Article:

Gaur, S.S. & Katiyar, D.C. (2026). कौटिल्य का मण्डल सिद्धान्त एवं विकसित भारत @2047 हेतु भारत की रणनीतिक रूपरेखा: संयुक्त राष्ट्र से परे वैश्विक संघर्ष प्रबन्धन का पुनर्विचार International Journal of Humanities, Commerce and Education, 2(5), 31–35.

Journal URL: *https://ijhce.com/* ***DOI:*** *https://doi.org/10.59828/ijhce.v2i5.64*